International Journal of Research - GRANTHAALAYAH
February 2026 14(2SCE)
समकालीन कला, साहित्य, संगीत एवं नृत्य का विज्ञान एवं समाज विज्ञान से अंतर्संबंध
www.granthaalayah.com

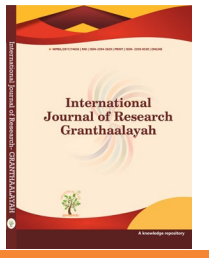

Original Article

NEED FOR INNOVATION IN THE INDIAN KNOWLEDGE TRADITION

भारतीय ज्ञान परंपरा में नवाचार की आवश्यकता

Dr. Gomti Chelani [1*]
[1] Professor and Head, Department of Political Science, Maharani Lakshmi Bai Government Girls Postgraduate College, Indore, India

ABSTRACT

English: The Indian knowledge tradition is one of the oldest and richest knowledge systems in the world. This tradition not only provides spiritual and philosophical perspectives but also makes significant contributions to the fields of science, mathematics, medicine, and art. The history of the Indian knowledge tradition spans the Vedas, Upanishads, Ayurveda, mathematics, astronomy, philosophy, and art.

This tradition has been rich not only from a spiritual but also from a scientific perspective.

In the present era of global competition and technological advancement, there is a need to revive this tradition with innovation, so that the heritage of ancient times can be kept alive, connected to the present, and made relevant and useful. This research paper attempts to discuss in detail this need, its scope, challenges, and potential solutions.

Methodology

This research paper attempts to draw conclusions based on the study of various research articles obtained from the internet, articles published in various journals, and books related to the Indian knowledge tradition.

Hindi: भारतीय ज्ञान परंपरा दुनिया की सबसे पुरानी और सबसे समृद्ध ज्ञान प्रणालियों में से एक है। यह परंपरा न केवल आध्यात्मिक और दार्शनिक नज़रिया देती है, बल्कि विज्ञान, गणित, चिकित्सा और कला के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है। भारतीय ज्ञान परंपरा का इतिहास वेदों, उपनिषदों, आयुर्वेद, गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन और कला तक फैला हुआ है।

यह परंपरा न केवल आध्यात्मिक बल्कि वैज्ञानिक नज़रिए से भी समृद्ध रही है।

आज के ग्लोबल कॉम्पिटिशन और तकनीकी तरक्की के दौर में, इस परंपरा को इनोवेशन के साथ फिर से ज़िंदा करने की ज़रूरत है, ताकि पुराने समय की विरासत को ज़िंदा रखा जा सके, आज से जोड़ा जा सके और उसे काम का और उपयोगी बनाया जा सके। यह रिसर्च पेपर इस ज़रूरत, इसके दायरे, चुनौतियों और संभावित समाधानों पर विस्तार से चर्चा करने की कोशिश करता है।

क्रियाविधि

यह रिसर्च पेपर इंटरनेट से मिले अलग-अलग रिसर्च आर्टिकल, अलग-अलग जर्नल में छपे आर्टिकल और भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़ी किताबों की स्टडी के आधार पर नतीजे निकालने की कोशिश करता है।

Keywords: Indian Knowledge Tradition, Innovation, Need, Modern Era, भारतीय ज्ञान परंपरा, नवाचार, आवश्यकता, आधुनिक युग

*Corresponding Author:
Email address: Dr. Gomti Chelani (gomti4678@gmail.com)

Received: 18 December 2025; **Accepted:** 14 January 2026; **Published** 27 February 2026
DOI: 10.29121/granthaalayah.v14.i2SCE.2026.6719
Page Number: 126-128
Journal Title: International Journal of Research -GRANTHAALAYAH
Journal Abbreviation: Int. J. Res. Granthaalayah
Online ISSN: 2350-0530, **Print ISSN:** 2394-3629
Publisher: Granthaalayah Publications and Printers, India
Conflict of Interests: The authors declare that they have no competing interests.
Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.
Authors' Contributions: Each author made an equal contribution to the conception and design of the study. All authors have reviewed and approved the final version of the manuscript for publication.
Transparency: The authors affirm that this manuscript presents an honest, accurate, and transparent account of the study. All essential aspects have been included, and any deviations from the original study plan have been clearly explained. The writing process strictly adhered to established ethical standards.
Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान प्रणाली का परिचय

भारतीय ज्ञान प्रणाली के नाम से जाने जाने वाले विचारोंए रीति.रिवाजों और दर्शनों का विशाल और प्राचीन समूह भारतीय वंश परंपरा के माध्यम से प्रसारित हुआ है। इसने भारतीय सभ्यता और संस्कृति को बहुत प्रभावित किया है और यह विज्ञानए आध्यात्मिकताए साहित्यए कला और सामाजिक परंपराओं सहित कई विषयों तक फैला हुआ है। Inbadas (2017) वेदों की प्राचीन पांडुलिपियाँए जिन्हें दुनिया के सबसे पुराने ग्रंथ माना जाता हैए भारतीय ज्ञान प्रणाली का आधार बनती हैं। वेदों में चिकित्साए खगोल विज्ञानए गणित और राजनीति से लेकर आध्यात्मिकता और दर्शन तक के विषयों पर भारी मात्रा में ज्ञान उपलब्ध है। Jayswal (2020) वे भारतीय जीवन शैली में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैंए समाज में संतुलनए सद्भाव और एकता के महत्व पर प्रकाश डालते हैं।

जीवन के प्रति समग्र दृष्टिकोण जो भारतीय ज्ञान प्रणाली की विशेषता हैए इसकी मुख्य विशेषताओं में से एक है। यह जीवन के सभी पहलुओं की परस्पर निर्भरता को पहचानता हैए जिसमें व्यक्ति और समाज के बीचए लोगों और प्राकृतिक दुनिया के बीचए और भौतिक और आध्यात्मिक के बीच संबंध शामिल हैं। Ministry of Education, Government of India (2023) आयुर्वेदए योग और वास्तु शास्त्र सहित कई भारतीय विषयए जो शरीर के अंदर और पर्यावरण के साथ सद्भाव और संतुलन बनाए रखने पर जोर देते हैंए इस समग्र दृष्टिकोण के प्रतिनिधि हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली प्रत्यक्ष अवलोकन और अनुभव से सीखने पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित करती हैए जो इसकी एक और महत्वपूर्ण विशेषता है। Das (2022) प्राचीन भारतीय ऋषियों और दार्शनिकों की शिक्षाएँए जिन्होंने ज्ञान और अंतर्दृष्टि विकसित करने के तरीकों के रूप में आलोचनात्मक सोच और आत्मनिरीक्षण को बढ़ावा दियाए इस पद्धति के अनुरूप हैं। [5] यह मौखिक परंपरा के महत्व पर भी जोर देता हैए जो बातचीतए बहस और कहानी कहने के माध्यम से जानकारी प्रसारित करती है। परिणामस्वरूपए भारतीय ज्ञान प्रणाली बनाने वाले विचारए रीति.रिवाज और प्रथाएँ असंख्य और जटिल हैंए और वे भारतीय समाज और संस्कृति में गहराई से निहित हैं। यह भारतीय जीवन शैली को आकार देनेए संतुलन और सद्भाव को प्रोत्साहित करनेए और आध्यात्मिकता और समुदाय की एक मजबूत भावना को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण रहा है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का ऐतिहासिक और दार्शनिक संदर्भ

भारतीय ज्ञान परंपरा का इतिहास वेदोंए उपनिषदोंए और प्राचीन ग्रंथों से प्रारंभ होता हैए जो ब्रह्मांडए जीवनए और मानव अस्तित्व के गूढ़ रहस्यों को समझने का प्रयास करते हैं। आयुर्वेदए योगए ज्योतिषए गणितए और खगोलशास्त्र जैसे क्षेत्रों में इस परंपरा ने अद्वितीय योगदान दिया है। उदाहरण के लिएए आर्यभट्ट और भास्कराचार्य जैसे गणितज्ञों ने शून्य और दशमलव प्रणाली की अवधारणा विकसित कीए जिसने आधुनिक गणित की नींव रखी।

Drishti IAS (2022) ने कहा कि 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बादए पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों को पुनर्जीवित और मजबूत करने के प्रयास किए गए। विभिन्न विषयों में अनुसंधान और शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IITs) भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIMs)और भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICSSR) जैसे संस्थानों की स्थापना की गई। Drishti (2020), Drishti (2022)

मंडावकर et al. (2023) के अनुसारए आजए भारतीय ज्ञान प्रणाली पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक वैज्ञानिक प्रगति का एक जीवंत मिश्रण है। भारतीय विद्वान और संस्थान विज्ञानए प्रौद्योगिकीए चिकित्साए गणितए दर्शनए साहित्य और कला सहित विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान देना जारी रखे हुए हैं। भारतीय ज्ञान और दर्शन विकसित और समृद्ध होते रहते हैंए जिसमें कई आधुनिक विचारक और विद्वान प्राचीन ग्रंथों का नए तरीकों से अन्वेषण और व्याख्या कर रहे हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली ने विज्ञानए गणितए चिकित्साए साहित्य और कला जैसे विभिन्न क्षेत्रों को प्रभावित किया हैए और भारतीय समाज और संस्कृति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। [8]

नवाचार की आवश्यकता का आधुनिक संदर्भ

आज के युग मेंए वैश्विक प्रतिस्पर्धाए तकनीकी प्रगतिए और सामाजिक.आर्थिक चुनौतियाँ भारतीय ज्ञान परंपरा को नए सिरे से परिभाषित करने की मांग करती हैं। पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक विज्ञान के साथ जोड़करए इसे अधिक प्रासंगिक और प्रभावी बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिएए आयुर्वेद को आधुनिक चिकित्सा अनुसंधान के साथ संयोजित कर स्वास्थ्य सेवा में सुधार किया जा सकता है।

वेदों और उपनिषदों का एक उल्लेखनीय पहलू उनकी अनुकूलनशीलता और आधुनिक समय के लिए प्रासंगिकता है। हजारों साल पहले रचे जाने के बावजूदए इन ग्रंथों में पाए जाने वाले उपदेश और सिद्धांत आज की दुनिया में भी लागू होते हैं। आंतरिक चिंतनए सचेतनताए और ज्ञान की खोज पर जोर व्यक्तिगत विकास और आत्म.खोज के लिए आवश्यक हैं। इसके अलावाए वेद और उपनिषद विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी बहुत महत्व रखते हैं। इन ग्रंथों में पाए जाने वाले कई विचारए जैसे कि अनंत की अवधारणाए सभी चीजों की परस्पर संबद्धताए और ब्रह्मांड को ऊर्जा के रूप में देखने की धारणाए अब आधुनिक वैज्ञानिकों द्वारा खोजे और अध्ययन किए जा रहे हैं। ये ग्रंथ पारिस्थितिकी तंत्र (इकोलॉजी) ज्योतिश शास्त्र (एस्ट्रोनॉमी) और औषधि (मेडिसिन) जैसे विषयों पर भी बहुमूल्य जानकारी देते हैंए जिन पर आज भी अनुसन्धान किया जा रहा है और जिनका इस्तेमाल आधुनिक समय में भी किया जा रहा है।

नवाचार की चुनौतियाँ

यह एक सर्वविदित तथ्य है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली न केवल हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त समस्याओं का समाधान करने में सक्षम हैए अपितु यह हजारों वर्षों के पष्चात भी पर्याप्त महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है। इस प्रणाली में आधुनिक युग की औद्योगिक तथा तक्नीकी विकास की स्थिति के कारण नवाचार करना अत्यन्त आवश्यक हो गया है। किन्तु इस नवाचार के समक्ष अनेक चुनौतियां भी विद्यमान हैं। सबसे बड़ी चुनौती परंपरा तथा आधुनिकता के समन्वय की है। कोई भी नवाचार करते समय हमें यह ध्यान में रखना होगा कि पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक परिस्थित में कैसे लागू किया जाए। साथ ही इस ज्ञान को वैज्ञानिक प्रमाणिकता के साथ

अपनाने की आवश्यकता है। प्राचीन साहित्य या तो संस्कृत में है अथवा प्राकृत में। इसके सही अनुवाद तथा सही व्याख्या की भी आवश्यकता है। इसके साथ ही शासन द्वारा इस क्षेत्र में स्पष्ट नीति निर्माण तथा उचित आर्थिक व्यय की स्वीकृति की भी आवश्यकता है।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा में नवाचार की आवश्यकता केवल शैक्षणिक या अनुसंधान की दृष्टि से ही नहींए बल्कि सामाजिकए सांस्कृतिक और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। नवाचार के माध्यम से हम प्राचीन ज्ञान को आधुनिक संदर्भ में जीवंत बना सकते हैं और मानवता के कल्याण में योगदान दे सकते हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत की धरोहर नहीं हैए बल्कि भविष्य के लिए एक मार्गदर्शक भी है। नवाचार के माध्यम से इसे पुनः जीवित करना आवश्यक है ताकि यह वैश्विक समाज को सतत विकासए नैतिकताए और वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान कर सके। इस शोध पत्र में प्रस्तुत विचार और सुझाव इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं।

REFERENCES

Das, D. V. (2022, June 20). Yoga, One of the Many Ways India Contributes to Making the World a Better Place. Times of India.
Drishti IAS. (2020, June 29). Schools of Indian Philosophy.
Drishti IAS. (2022, August 14). 75 Years of Independence: The Changing Landscape of India.
Inbadas, H. (2017). Indian Philosophical Foundations of Spirituality at the End of Life. Mortality, 22(4), 320–333. https://doi.org/10.1080/13576275.2017.1351936
Jayswal, P. J. (2020, November 20). Importance of Vedic Knowledge in Modern Times. Times of India.
Ministry of Education, Government of India. (2023, September 13). Indian Knowledge Systems.